श्री अष्ट लक्ष्मी स्तोत्रम

श्री आदि लक्ष्मि

1

सुमनस वन्दित सुन्दरि माधवि, चन्द्र सहोदरि हेममये
मुनिगण वन्दित मोक्षप्रदायनि, मञ्जुल भाषिणि वेदनुते ।
पङ्कजवासिनि देव सुपूजित, सद्गुण वर्षिणि शान्तियुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, आदि लक्ष्मि परिपालयमाम् ॥

श्री धान्य लक्ष्मि

2

अयिकलि कल्मष नाशिनि कामिनि, वैदिक रूपिणि वेदमये
क्षीर समुद्भव मङ्गल रूपिणि, मन्त्र निवासिनि मन्त्रनुते ।
मङ्गलदायिनि अम्बुजवासिनि, देवगणाश्रित पादयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, धान्य लक्ष्मि परिपालयमाम् ॥

श्री धैर्य लक्ष्मि

3

जयवरवर्षिणि वैष्णवि भार्गवि, मन्त्र स्वरूपिणि मन्त्रमये
सुरगण पूजित शीघ्र फलप्रद, ज्ञान विकासिनि शास्त्रनुते ।
भवभयहारिणि पापविमोचनि, साधु जनाश्रित पादयुते
जय जयहे मधु सूधन कामिनि, धैर्य लक्ष्मी परिपालयमाम् ॥

श्री गज लक्ष्मि

4

जय जय दुर्गति नाशिनि कामिनि, सर्वफलप्रद शास्त्रमये
रथगज तुरगपदाति समावृत, परिजन मण्डित लोकनुते ।
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित, ताप निवारिणि पादयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, गज लक्ष्मी रूपेण पालयमाम् ॥

श्री सन्तान लक्ष्मि

5

अयि खग वाहिनि मोहिनि चक्रिणि, रागविवर्धिनि ज्ञानमये
गुणगण वारधि लोक हितैषिणि, सप्तस्वर भूषित गाननुते ।
सकल सुरासुर देव मुनीश्वर, मानव वन्दित पादयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, सन्तान लक्ष्मी परिपालयमाम् ॥

श्री विजय लक्ष्मि

6

जय कमलासिनि सद्गति दायिनि, ज्ञानविकासिनि गानमये
अनुदिन मर्चित कुङ्कुम धूसर, भूषित वासित वाद्यनुते ।
कनकधरास्तुति वैभव वन्दित, शङ्करदेशिक मान्यपदे
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, विजय लक्ष्मी परिपालयमाम् ॥

श्री विद्या लक्ष्मि

7

प्रणत सुरेश्वरि भारति भार्गवि, शोकविनाशिनि रत्नमये
मणिमय भूषित कर्णविभूषण, शान्ति समावृत हास्यमुखे ।
नवनिधि दायिनि कलिमलहारिणि, कामित फलप्रद हस्तयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, विद्या लक्ष्मी सदा पालयमाम् ॥

श्री धन लक्ष्मि

8

धिमिधिमि धिन्धिमि धिन्धिमि-दिन्धिमि, दुन्धुभि नाद सुपूर्णमये
घुमघुम घुङ्घुम घुङ्घुम घुङ्घुम, शङ्ख निनाद सुवाद्यनुते ।
वेद पूराणेतिहास सुपूजित, वैदिक मार्ग प्रदर्शयुते
जय जयहे मधुसूदन कामिनि, धन लक्ष्मि रूपेण पालयमाम् ॥

इति श्री अष्ट लक्ष्मी स्तोत्रम संपुर्णमं।।

Source: https://www.hindugallery.com/